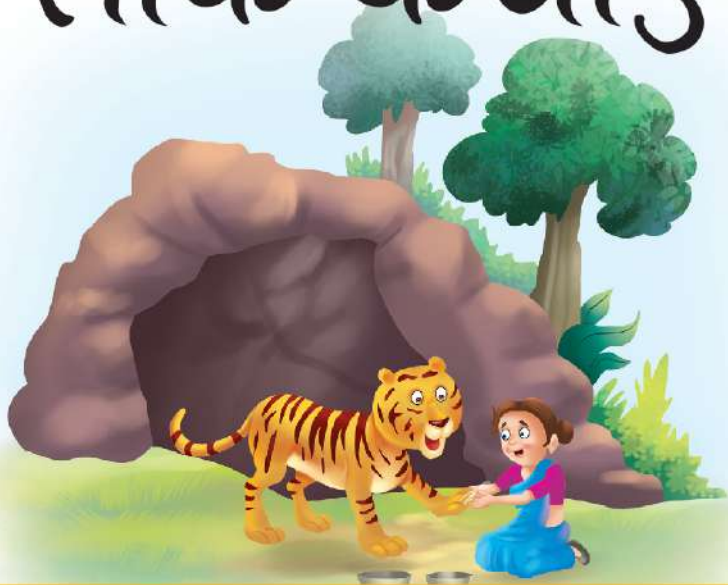


प्रसिद्ध लोक कथाएं



☐ बेकार की बहस	2
☐ पालतू बाघ	4
☐ राजा और सुनहरा पेड़	6
☐ कद्दू	8
☐ कुआं और पानी	10
☐ हवा में महल	12
☐ एक जुआरी	14



बेकार की बहस



एक बार की बात है—दो शिकारी किसी शिकार की तलाश में निकले। अचानक उन्हें पेड़ पर एक जंगली बतख बैठी दिखाई दी। दोनों शिकारी खुश हो गए। मोटी-ताजी बतख देखकर उनके मुंह में पानी आ गया। एक शिकारी ने कहा, “हम इस बतख का शोरबा बनाकर स्वाद लेंगे।” दूसरा शिकारी बोला, “नहीं, हम बतख को भूनकर खाएंगे।”

दोनों शिकारी इसी बात को लेकर बहस करने लगे। वे इस मामले को नहीं सुलझा सके, इसलिए उन्होंने गांव के मुखिया के पास जाने का फैसला किया। गांव के मुखिया ने सब कुछ सुनकर कहा, “तुम लोग लड़ क्यों रहे हो? आधी बतख को भून लेना और आधी का शोरबा बना लेना।”





यह सुनकर शिकारी बहुत खुश हुए। उन्होंने मुखिया को धन्यवाद दिया और उस स्थान पर गए, जहां उन्होंने बतख देखी थी। लेकिन वे यह देखकर निराश हो गए कि बतख वहां से उड़ गई थी। दोनों शिकारी खाली हाथ लौट आए। मुखिया ने उनसे कहा, “भविष्य में इस बात का ध्यान रखना कि जब जिस काम का समय हो, उसे ही करना चाहिए। अगर तुम उस समय बेकार की बहस न करके शिकार कर लेते, तो इस समय बतख का स्वाद ले रहे होते।” यह सुनकर दोनों शिकारियों की समझ में आ गया कि सिर्फ बातें बनाने या बहस करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।



पालतू बाघ



एक बार एक महिला को एहसास हुआ कि जब से उसका पति युद्ध से वापस आया है, वह कुछ बदल-सा गया है। महिला चाहती थी कि उसका पति उसके साथ पहले की तरह पेश आए। अतः वह इसका उपाय जानने के लिए एक साधु के पास गई। साधु ने कहा, “मैं तुम्हारे पति को पहले जैसा करने के लिए एक दवा दे दूंगा, जिससे वह पहले की तरह पेश आने लगेगा। लेकिन तुम्हें किसी जीवित बाघ की मूँछ के बाल लाकर देने होंगे।”

तत्पश्चात् उस महिला ने चावल से भरे कटोरे को मांस से ढका और बाघ की गुफा के बाहर रख आई।





अगले दिन महिला दूसरा कटोरा रखने गई, तो उसने देखा कि पहले वाला कटोरा खाली पड़ा है। इसी तरह महीनों बीत गए। एक दिन बाघ ने उसे अपना सिर थपथपाने की इजाजत दे दी। तब महिला ने उसकी मूंछ के बाल काट लिए और उसे धन्यवाद देकर लौट आई।

फिर वह महिला उन बालों को लेकर साधु के पास गई। साधु ने कहा, “अब तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है। अगर तुम एक बाघ को पालतू बना सकती हो, तो क्या अपने पति को नहीं बदल सकतीं?” महिला को साधु की बात समझ में आ गई। वह खुशी-खुशी वहां से चली आई।



राजा और सुनहरा पेड़



एक राजा की चार रानियां थीं, लेकिन उसे अपनी छोटी रानी से सबसे ज्यादा प्यार था। ऐसे में अन्य तीनों रानियां छोटी रानी से जलती थीं। एक दिन उन्होंने साजिश करके छोटी रानी को राज्य से निकलवा दिया। उस समय राजा बाहर गया हुआ था। जब वह लौटा, तो उससे यह कहा गया कि छोटी रानी महल छोड़कर कहीं चली गई। राजा कुछ न कर सका, लेकिन उसका दिल टूट गया था।

अब राजा अक्सर छोटी रानी को याद करके रोता रहता था। एक दिन राजा को सपने में एक सुनहरा पेड़ दिखाई दिया। उसने कहा, “मेरे पास आओ। मैं तुम्हें छोटी रानी के





पास ले चलूंगा।” इसके बाद राजा की आंख खुल गई। उसने निश्चय किया कि वह उस पेड़ का पता लगाएगा।

कई दिनों तक यात्रा करने के बाद राजा को वह सुनहरा पेड़ मिल गया। वह एक झील के बीच में था। राजा ने पेड़ के पास जाकर पूछा, “मेरी पत्नी कहां है?” पेड़ ने कहा, “वह पास वाले जंगल में है।”

फिर पेड़ ने उसे बताया कि किस तरह बड़ी रानियों ने साजिश करके छोटी रानी को जंगल में भेज दिया था। राजा बहुत उदास हुआ। वह पास वाले जंगल से छोटी रानी को वापस ले आया तथा तीनों बड़ी रानियों को सजा दी।



कद्दू



एक बार की बात है—किसी बूढ़े व्यक्ति के मौत के दिन करीब थे। तभी उसने अपने बेटे से कहा, “जब मैं मर जाऊँ, तो मेरी कब्र के पास कद्दू के कुछ बीज बो देना।” कुछ दिनों बाद वह बूढ़ा व्यक्ति मर गया। तब बेटे ने उसकी कब्र के पास कद्दू के बीज बो दिए। हालाँकि उसकी समझ में नहीं आया था कि पिता ने ऐसा करने को क्यों कहा, लेकिन उसने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया।

जब कद्दू पककर तैयार हो गए, तो बेटे ने उन्हें बाजार में बेच दिया। जो भी व्यक्ति कद्दू खाता, वह उसके स्वाद का दीवाना हो जाता। शीघ्र ही कद्दुओं की बिक्री बढ़ गई। दूर-दूर से लोग उसके पास कद्दू लेने आते थे।

कुछ दिनों बाद वह लड़का बहुत अमीर हो गया। उसके





पास सोने के काफी सिक्के जमा हो गए। उस राज्य का राजा बहुत लालची था। वह उन सिक्कों को प्राप्त करना चाहता था। अतः उसने अपने सिपाहियों को उस लड़के के घर सिक्के लेने के लिए भेजा। लेकिन जब राजा ने वह संदूक खुलवाया, तो उसमें से सांप निकले। राजा बहुत डर गया और उसने वह संदूक वापस भिजवा दिया।

जब उस लड़के ने वह संदूक खोला, तो उसके सोने के सिक्के पहले की तरह जगमगा रहे थे। उन सिक्कों को भला उससे कौन छीन सकता था। वह तो उसकी मेहनत का फल और उसके पिता का आशीर्वाद था।



कुआं और पानी



एक बार एक आदमी ने अपना कुआं किसी किसान को बेच दिया। जब किसान कुएं से पानी निकालने लगा, तो वह बोला, “मैंने तुम्हें पानी नहीं, केवल कुआं बेचा है। तुम्हें पानी के लिए अलग से पैसे देने होंगे।” किसान समझ गया कि उसे ठगा जा रहा है। उसने उस आदमी से बात करनी चाही, लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। अंततः किसान राजा के पास गया और उसे सारी बात बताई। राजा ने उस आदमी को दरबार में बुलाया।





राजा के सामने उपस्थित होकर उस आदमी ने कहा, “मैंने किसान को केवल कुआं बेचा था। इसे पानी लेना है, तो अलग से पैसे देने होंगे।” यह सुनकर चतुर राजा ने कहा, “ठीक है, तुमने इसे केवल कुआं बेचा है और पानी तुम्हारा है। ऐसे में तुम्हें किसान के कुएं में पानी रखने का कोई हक नहीं है। अतः तुम किसान को उस कुएं में अपना पानी रखने का किराया दो या अपना पानी वहां से निकाल लो।”

यह सुनकर वह आदमी दंग रह गया। वह समझ गया कि चतुर राजा ने उसे उसके ही जाल में फंसा दिया है। उसने राजा और किसान से माफी मांगी। इसके बाद किसान आराम से कुएं का पानी इस्तेमाल करने लगा।



हवा में महल



एक बार की बात है—एक लड़का अक्सर अपनी कक्षा से गायब रहता था। एक दिन उसे स्कूल के प्रधानाध्यापक ने बुलवाया। जब वह लड़का आया, तो दोपहर के भोजन का समय हो गया था। उन्होंने पूछा, “क्या यह आने का समय है?” लड़के ने कहा, “मैं आज इसलिए देर से आया, क्योंकि मुझे अपने खेत में सोने का एक टुकड़ा मिला है।”

प्रधानाध्यापक ने हैरानी से पूछा, “तुम सोने के उस टुकड़े से क्या खरीदोगे।” लड़के ने कहा, “मैं सोने का टुकड़ा बेचकर कई एकड़ जमीन खरीदूंगा और एक बड़ा-सा घर बनवाऊंगा तथा थोड़ा पैसा अपनी शिक्षा के लिए आपको दे दूंगा।” यह सुनकर प्रधानाध्यापक बहुत खुश हुए और बोले,





“आशा है, तुमने सोने के उस टुकड़े को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दिया होगा।” लड़के ने जवाब दिया, “मुझे ऐसा करने का मौका ही नहीं मिला। क्योंकि जैसे ही मां ने मुझे नींद से जगाया, वह ओझल हो गया।”

“क्या? तुमने यह सब रात को सपने में देखा था।” प्रधानाध्यापक जोर से चिल्लाए। लड़के ने हामी भरी। लड़के के जाने के बाद प्रधानाध्यापक को याद आया कि उन्होंने उसे अपने पास क्यों बुलाया था। प्रधानाध्यापक उस लड़के के बारे में बहुत देर तक सोचते रहे कि वह कैसे हवा में महल बना लेता है।



एक जुआरी



किसी राज्य में एक राजा रहता था। वह अत्यंत सीधा-सादा और ईमानदार शासक था। एक दिन एक आदमी उसके दरबार में आया और उसे एक मोटी-सी मुर्गी उपहार स्वरूप भेंट की। राजा ने मुर्गी देने का कारण पूछा।

तब उस आदमी ने कहा, “मैंने आपके नाम से दांव खेला और यह मुर्गी जीत ली। इसलिए आप इसे स्वीकार करने की कृपा करें।” यह सुनकर राजा को आश्चर्य तो हुआ, लेकिन उसने मुर्गी रख ली।





कुछ दिनों बाद वह आदमी पुनः दरबार में आकर बोला, “महाराज! आज मैंने फिर आपके नाम से जुआ खेला और यह बकरी जीत ली।” राजा ने खुश होकर बकरी ले ली।

इसके कुछ ही दिनों बाद वह आदमी पुनः दरबार में आया, लेकिन इस बार उसके पास कोई उपहार नहीं था। वह अपने साथ दो लोगों को लेकर आया था।

राजा ने पूछा, “तुम इन लोगों को क्यों लाए हो?”

वह आदमी बोला, “आज मैंने आपके नाम से बाजी



खेली और इन लोगों से हार गया। अब मुझे इन दोनों को पैसा देना है और वह पैसा आपको देना होगा, क्योंकि मैंने आपके नाम से इनके साथ जुआ खेला था।”

उस आदमी की बात सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया, लेकिन वह कुछ नहीं कह सका। राजा को एहसास हुआ कि उसे पहले उस आदमी से जुए में जीतने वाले उपहार नहीं लेना चाहिए था। उसने उस आदमी के साथ आए लोगों को धन दे दिया, लेकिन साथ ही उससे कहा कि वह आज के बाद कभी उसके नाम से जुआ न खेले।